

॥ पत्रहितैषिणी ॥

अर्थात्

हिन्दीमें खत पत्र आदि सिखाने की पुस्तक

जिसे

महकमे सरिश्तेतालीम अवध के हस्तुलहुकम हिन्दी पढ़नेवालों के
लिये उर्दूमुफ्फिदुल्इंशा से पण्डित शिवनारायण मरहूम
ज़िलअ लखनऊ के डिपुटी इन्स्पेक्टर ने पण्डित
महेशदत्त सुकुल और पण्डित गणेशप्रसाद
त्रिवेदी उसी ज़िलअ के मुदरिसों की
सलाह से अवध देश भाषा
में उल्था किया ।

निज प्रबन्ध पाठशालाओं अवधदेशके लिये

लखनऊ

मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी
सन् १९१७ ई० ॥

कापीराइट महफूज है बहक सरिश्तेतालीम अवध

भूमिका ॥



प्रकट हो कि इस पुस्तक के उल्था करने में इसका बड़ा विचार रहा है कि इसमें ऐसे शब्द हों जो अवध के सब लोगों के रोज़ रोज़ के बोलचाल में आते हों चाहे वह हिन्दी हों वा फ़ारसी वा अरबी वा संस्कृत आदि में से हों सब ठीक ठीक देशभाषाही बनाई हुई सी ज़बान न हो ॥

पत्रहितैषिणी ॥

प्रथम प्रकरण ॥

पत्र शिक्षक विद्या के विषय में ॥

इस विद्या से चिट्ठियों का लिखना पढ़ना आता है चिट्ठियां तीन तरह की होती हैं एक छोटे से बड़ों को और दूसरे बड़े से छोटों को और तीसरे बराबरवाले को और हमेशा जब पत्री लिखना हो उस समय यह विचार लेना चाहिये कि जिसे पत्र लिखना है वह बड़ा है वा बराबर वा छोटा छुटाई और बड़ाई और बराबरी दो प्रकार की होती है एक नातेदारी और मित्रता में दूसरे जबकि नातेदारी आदिक न हो परंतु मुलाकात और जान पहिचान वा संसार का कुछ काम उससे हो सो नातेदारी में तो छुटाई बड़ाई और बराबरी अवस्था पर होगी और जान पहिचान में उसके अधिकार और धन और गुण पर जैसे कि लिखनेवाला कैसाही बड़े दर्जेवाला वा धनी वा विद्यावान् वा ज्ञानवान् हो परंतु जब अपने से बड़े नातेदार को लिखेगा तो अवश्य बड़ा और पुरुषा करके लिखेगा और गौरियत में जिसे लिखते हैं चाहे वह उमर में छोटा हो परंतु दर्जे वा धन वा विद्या में लिखनेवाले से अधिक है तो उसे अवश्य बड़ा करके लिखेंगे और चाहे उमर में कैसाही बड़ा है पर दर्जे आदि में लिखनेवाले से कम है तो बड़ा करके लिखना कुछ अवश्य न होगा ॥

चिट्ठी लिखने में कई बातों का विचार रखना चाहिये पहले यह कि सारे पत्र में कोई बेमतलब शब्द न हो कि जिससे कोई प्रयोजन पत्र के आशय से नहो दूसरे यह कि ऐसे सहल सहल शब्द हों कि जिन्हें सब लोग समझें चाहे वह हिंदी संस्कृत फारसी

अरबी में से जिस भाषा के हों तीसरे यह कि वर्णन बहुत संक्षेप और ठीक ठीक हो कोई बात अपनी हृदयसे बढ़ने न पावे चौथे यह कि संस्कृत की रीति पर पदों में बहुत समास न होने पावें पांचवें यह कि बाप माको ऐसी बातें न लिखे कि आपकी बड़ी कृपा होगी या मैं अहसानमन्द होऊंगा क्योंकि ऐसी बातों से एक तरह की जुदाई पाई जाती है छठे इस बात का विचार रखे कि आदि से अन्त तक एकही प्रकारकी लिखावट हो ऐसा न हो कि कहीं छोटा कहीं बड़ा और कहीं अपना कहीं बेगाना बनादेवें सातवें यह कि सरकारी कागजात अर्जी परवाने में किसी तरह की बनावट वा सजावट वा कठिन शब्द न हों केवल साफ़ साफ़ मतलब हो हिंदी में बहुत प्रकार के आदाब और अलकाब नहीं होते जैसे कि उर्दू फ़ारसी में हैं हिंदी में जो बड़े को लिखना हो तो सिद्धि श्री और छोटे और बराबरवाले को लिखना हो तो स्वस्ति श्री लिखते हैं जब ब्राह्मण को लिखना हो छोटा बड़े को प्रणाम और बराबर वाले को नमस्कार और जब वह मनुष्य जिसे चिट्ठी लिखते हैं अपने से छोटा ब्राह्मण हो और ब्राह्मण को छोड़ किसी वर्ण का छोटा बड़ा या बराबर हो उसे आशीर्वाद करके लिखेगा और क्षत्रिय वैश्य वा शूद्र ये जब ब्राह्मण को लिखेंगे तो प्रणाम पालागन वा दंडवत् करके लिखेंगे और आपस में रामराम सीताराम और क्षत्रियों में विशेष करके जुहार वा सलाम लिखते हैं ॥

दो० श्री लिखिये षट् गुरुन को पांच स्वामि रिपु चारि ।

तीनि मित्र द्वै भृत्य को एक पुत्र अरु नारि ॥

अर्थात्, गुरुको ६ श्री और स्वामी को ५ शत्रुको ४ मित्र को ३ टहलूको २ पुत्र और स्त्री को श्री १ लिखते हैं ॥

दूसरा प्रकरण ॥

छोटों की ओर से बड़ों को ॥

१ पत्र गुरु के नाम ॥

सिद्धिश्री सर्वविद्यालंकृत सर्वोपरि विराजमान गुरु चन्द्रमौलि जीव को चरणसेवक रामनाथ का प्रणाम पहुँचे ॥

आज के आठवें दिन मेरे भाई का विवाह होगा और बरात गंगाजी के पार चार मंजिल पर जावेगी आप जानते हैं कि मेरे घर में आजकल मुझे छोड़ कोई बन्दोबस्त करनेवाला नहीं है और काम बड़ा है इसलिये मनोरथ करता हूँ कि १२ दिन की छुट्टी कृपा हो इस कार्य से निपटकर बहुत शीघ्र फिर हाजिर होऊँ मुझे बहुत शोच है कि मेरे पढ़ने में बड़ा हर्ज होगा दफ्तर के सब लड़के आगे बढ़ जावेंगे और मैं पीछे रह जाऊँगा परन्तु क्या करूँ लाचार हूँ यह भी जरूरी काम है भला आपकी कृपा से मिहनत करके जल्द बराबर हो जाऊँगा मिति वैशाख बदी ३ संवत् १९२७ तथा अप्रैल ता० ३ सन् १८७० ई० ॥

२ पत्र पुत्र की ओर से माता को ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वशुभोपमायोग्य माताजी को शिवदत्त का प्रणाम पहुँचे ॥

आपकी चिट्ठी पहुँची उसे पढ़कर मैं बहुत कृतार्थ हुआ आपकी आज्ञानुसार मैं बहिन के घर गया था जीजा से मैंने कहा था कि माताजी ने बहिन को बुलाया है और आपको बहुत बहुत तरह से आशीर्वाद दिया है पर उन्होंने यह कहा कि अभी के जाने में मुझे बहुत दिक्कत होगी जाड़े की ऋतु आने दो मैं साहब के साथ दौरे पर जाऊँगा उस समय ले जाना ॥

आगे मैंने यह अर्ज की थी कि मेरे कपड़े बहुत पुराने हुये हैं

दो तीन जोड़े भेज दो परंतु अभी तक कोई कपड़ा मेरे पास न पहुँचा मेरा बड़ा हर्ज है जो दश बारह दिन और देर हुई तो बाहर निकलना बहुत कठिन होगा और अधिक ग्लानि होगी । मिति आषाढ़ शुक्ल ३ संवत् १६२७ तथा जून ता० ३ सन् १८७० ई० ॥

३ पत्र बाबा के नाम ॥

सिद्धि श्री ६ सर्वोपरि विराजमान बाबा साहब रामप्रसाद जीव को सूर्यबली का प्रणाम पहुँचे ॥

कल रामपुर से एक मनुष्य आया उसके कहने से जाना गया कि वहां दो दिन तक बराबर पानी बरसा नदी भी बहुत बढ़ी है और ईश्वर की कृपा से अन्न भी सस्ता होने लगा है लोग अब तक व्याकुल थे कि क्या होगा परमेश्वर ने अपनी दया की अब पट्टों के देने में विलम्ब न चाहिये जो आज्ञा हो तो कल जाकर बांट दूं मेरे पास छपे हुये पट्टे धरे हैं और वही लोग लेनेवाले हैं जिन्होंने परसाल लिया था ॥ मिति कार्तिक बदी ५ संवत् १६२७ तथा अक्टूबर ता० ५ सन् १८७० ई० ॥

४ पत्र नाती की ओर से नाना को ॥

सिद्धि श्री ५ सकलशुभोपमायोग्य नानाजी को अब्दुल्लह का आदाब पहुँचे ॥

आप कह गये थे कि दूसरी दफ़्तर की पुस्तकें आठ दश दिन में हम भेज देंगे परंतु एक महीने का समय हुआ अभी तक मुझे पोथियां न कृपा हुई पण्डित साहब प्रतिदिन तकैयद करते हैं और जिन लड़कों के पास किताबें थीं उन्हें उन्होंने चढ़ा दिया मैं अभी तीसरी दफ़्तर में पड़ा हूं आपके पास पोथियां धरी हैं और यहां मोल लेने से सिवाय नुकसान के कुछ नफ़ा नहीं है अब सुधि करके भेजवा दीजियेगा नहीं तो दफ़्तर में किसी योग्य न

रहंगा माताजी की ओर से प्रणाम अंगीकार हो ॥ मिती श्रावण
सुदी ४ संवत् १६२७ तथा जुलाई ता० ४ सन् १८७० ई० ॥

५ पत्र नाती की ओर से नानी को ॥

सिद्धिश्री ५ दयाशालिनी नानीजी को रामप्रसाद का
प्रणाम पहुँचे ॥

यहां मैं बहुत अच्छी तरह आनन्द से हूँ और आपके शुभ
समाचार रात्रि दिन चाहता हूँ तुम्हारा पत्र पहुँचा आपकी आज्ञा-
नुसार १०) रु० की सर्कारी हुंडी भेजता हूँ वह भाई नारायणदास
के नाम है हुंडी की पीठपर भरपाई लिखकर सर्कारी खजाने में
लेजावें वहां से तुरंत रुपये मिल जावेंगे किसी प्रकार का कुछ खर्च
न देना होगा जो वहां पूछें कि किसने हुंडी भेजी है तो मेरा नाम
लेवें और यदि पूछें कि किसके नाम है तो अपना नाम बतादेवें
तीन महीने पीछे दूसरी १००) रु० की हुंडी भेजूंगा खातिरजमा
रक्खें मेरा चित्त उसी ओर है मिती माघ बदी १० संवत् १६२७
तथा तीन जनवरी सन् १८७१ ई० ॥

६ पत्र चाचा के नाम ॥

सिद्धिश्री ५ सर्वोपमायोग्य चाचाजीव को साहबदीन का
प्रणाम पहुँचे ॥

आगे जब से आप बलरामपुर को गये हैं तब से आपका कोई
पत्र नहीं आया पिताजी और माताजी सब बहुत व्याकुल हैं बहुत
जल्द अपने शुभ समाचार से प्रसन्न कीजिये आप कहगये थे कि
हम वहां पहुँचकर तुरंत मय असबाब आदमी भेजेंगे उसका भी
कुछ ब्योरा न जानपड़ा और राजा साहब से आपसे भेंट हुई वा
नहीं जो हुई तो वे किस तरह से आपसे मिले चाहिये कि कोई न
कोई यत्न यहां आपके उद्यम का जल्द निकल आवे क्योंकि अब

अवध में यही एक दो हिंदोस्तानी सर्कारें हैं और उन्हीं लोगों के यहां हम लोगों का बड़ा मान है पुस्तक बेचनेवाले लाला रामदास मुझे मिले थे अपने रुपये मांगते थे मैं ठीक ठीक नहीं जानता कि उनके कितने रुपये आप चाहते ५ नहीं तो मैं दे देता जो आप लिख भेजें उन्हें दे दूं ॥

७ पत्र भानजे की ओर से मामा को ॥

सिद्धि श्री ५ सकल गुणधाम मामाजी को कृपाशंकर का प्रणाम पहुँचे ॥

आगे जो छोटी बहिन के विवाह के मध्ये आपने लिखा था कि लाला सूर्यमल के यहां गणना बन गई है उससे बहुत खुशी हुई और माताजी ने भी बहुत प्रसन्न किया है क्योंकि बहुत अच्छा पढ़ा लिखा मिहनती कमासुत वर है ईश्वर उसको चिरंजीव रखे आपने जो लाला साहब की बातें लिखीं मुझे उनसे बहुत ही आश्चर्य हुआ कि वे आपसे किस बात का कौल करार करते हैं क्या हम उनके लड़के को मोल लेते हैं जोकि इतने रुपये उन्हें दें हमसे जो हो सकगा वह अपनी लड़की को देंगे यह भलमंसी की बात नहीं है भला वे इसीको बहुत नहीं समझते कि उनका घर बस जायगा विवाह कार्य क्या हुआ मोल बेच हुआ बड़े संदेह की बात है कि अभी ये रीतें यहां से दूर नहीं हुईं मिति चैत्र बदी ७ संवत् १९२७ तथा १ मार्च सन् १८७१ ई० ॥

८ पत्र बहिन के बेटे की ओर से मौसी को ॥

सिद्धि श्री ५ हितकारिणी मौसी को रामदयाल का प्रणाम पहुँचे ॥

आपका कृपापत्र डाक के द्वारा आया हाल मालूम हुआ आप ने जो लिखा कि मेरे देखने को आपका बहुत बहुत चित्त चाहता

है सो सत्य बात है मुझे भी आपके चरण छूने की बड़ी इच्छा है क्योंकि अब ५ वर्ष बीतते हैं कि जब से मैं आपसे दूर हूँ परंतु क्या करूं न ऐसी कोई तात्नील होती है कि उसमें हाजिर होऊँ और न छुट्टी मिलती है अब मैंने सीतापूर की बदली के लिये दरखास्त की है चाहिये कि मंजूर होजावे उस समय मैं जरूर जरूर आपके चरणों के निकट प्राप्त होकर जाऊंगा माताजी फर्रुखाबाद से अभी नहीं लौटीं कल पत्री आई थी उसमें लिखा था कि अभी १५ दिन वहां और रहना होगा उसके पीछे सब लोग वहां से चलेंगे चाहिये कि २० दिनमें आजावें ॥ मिति पौषशुक्ल १४ संवत् १६२७ तथा १५ दिसंबर सन् १८७० ई० ॥

६ पत्र छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को ॥

सिद्धिश्री ५ सर्वशुभोपमेय कृपासागर भाई करीमबरूश को रहीमबरूश का सलाम पहुँचे ॥

आगे कल तारबरकी के द्वारा भैया तालिबका हाल सुनकर बड़ा दुःख हुआ कुछ कह नहीं सका कि कितनी बड़ी दैवी पड़ी कहां आप उसके विवाह के यत्न में थे कहां उसने सबको त्याग कर ईश्वर के यहां की यात्रा की इस दुःख का कहांतक वर्णन करूं कि रोने की भी शक्ति नहीं रही बड़ी विपत्ति की बात है कि ऐसा सपूत लिखा पढ़ा लड़का चलबसे अब हमारे शोच करने और रोने से क्या हो सका है सबूरी के सिवाय कोई ओषधि नहीं अब जो आप सबूरी न करेंगे और सबको दिलासा न देंगे तो ये सब स्त्रियां शिर पीट पीटकर मरजावेंगी और कुछ लाभ न होगा ईश्वर उस बिचारे को वैकुण्ठवास दे और हम लोगों को संतोष दे ॥ मिति भाद्र-पद सुदी ५ संवत् १६२८ तथा अगस्त सन् १८७१ ई० ॥

१० पत्र बहनोई की ओर से साली को ॥

स्वस्तिश्री बड़ी साली को नंदनंदन का यथायोग्य पहुँचे ॥
 बहुत दिनों पीछे तुम्हारा पत्र आया आपके शुभ समाचार जानने से चित्त तहदिल हुआ आपसे जब पूछो कि आप खत क्यों नहीं भेजती हैं तो आप यह जवाब देती हैं कि कोई लिखनेवाला न था अच्छा ओढ़र आपने निकाला है और यदि निश्चय यही बात है तो यह भी किसकी चूक है मैंने तो आपसे कईबार कहा था कि केवल दो किताबें नागरी की जो आप श्रम करके एक दो महीने में पढ़लेंगी तो अपने खतपत्र लिखने में किसीसे हाथ न जोड़ने पड़ेंगे परंतु आप क्यों मानेंगी देखो मेरी छोटी बहिन ने देखतेही देखते नागरी का लिखना पढ़ना सीख लिया अब सब घर का हिसाब किताब वही लिखती है और माताजी की ओर से सब को चिट्ठी पत्री लिखा करती है और घरमें उससे बड़ा काम निकलता है जब ईश्वर की कृपा से बड़ी होगी तो अपने लड़के बालों को पहिलेही से अच्छीअच्छी बातें सिखलावेगी और जो वार्ता करेगी वह ठीक ठीक और बुद्धिमानी के साथ करेगी अब भी कुछ संदेह नहीं है जो आप मुस्तैद हों तो एकही महीने में अपने प्रयोजन भर को आजावे आगे शुभ मिती अगहन बदी ७ संवत् १६२६ तथा नवम्बर सन् १८६६ ई० ॥

११ पत्र सेवक की ओर से स्वामी को ॥

सिद्धिश्री ५ सकलगुणधाम राजा साहेब को रामसहाय का प्रणाम पहुँचे ॥

आजकल दास के घरमें खर्च की ओर से बहुत तंगी है और इसी दशा में लड़के का विवाह होनेवाला है और आपके सिवाय कोई हितकारी और पालन करनेवाला नहीं कि उसको तक-

लीफ दू जो विवाह न होता तो इतनी आवश्यकता भी न थी परंतु यह आबरू का काम है जो अच्छे प्रकार से न करें तो आपके नौकर कहलाते हैं मैंने भैया मथुराप्रसाद से कई बार कहा कि सरकार से तुम खर्च मांगो हुआ जरूर कृपा करेंगे परंतु उसको बड़ी लज्जा आती है क्योंकि हमेशा हमसे सरकार का नमक खाते हैं अब थोड़ी सी बात के लिये क्या आपको सतावें परंतु लाचार जब किसी तरह की युक्ति न हो सकी तो उस समय मैंने उसके पूछे विना यह विनयपत्र आपके चरणों के निकट भेजा है कि जो ऐसे समय सरकार से पिछले हिसाब का फर्चा हो जायगा तो अत्यन्त कृपा और पालन होगा ॥ आगे शुभ मिति कार बदी ७ संवत् १६२७ ॥

१२ पत्र तहसीलदार वा और किसी सरकारी ओहदेदार को ॥

सिद्धि श्री ५ कृपासागर सकलगुण आगर तहसीलदार साहेब को प्रणाम के पीछे यह विनय है कि मेरे वहां आने के लिये आपका आज्ञापत्र आया परंतु मैं कल किसी रीति से नहीं आ सका क्योंकि श्रीयुत डिपुटी कमिशनर साहब बहादुर की कचहरी में मेरा मुकद्दमा हो रहा है और मैं आप जाकर रूबकारी करता हूं हां परसों तक जो परमेश्वर चाहेंगे तो जरूर हाजिर होऊंगा जो कोई बहुत ही जरूरत हो तो कृपापूर्वक आज्ञा दीजिये उसी समय आपकी इच्छानुसार कार्य हो जायगा वहां के हाजिर होने में मुझे किसी प्रकार का उज्र न था पर रूबकारी से विवश हूं और पहले जो आपने अस्पताल के चंदे के बारे में लिखा था मुझे मंजूर है जो आप लिखें उस पर मैं अपने दस्तखत कर भेज दूंगा १०) रु० माहवारी तक मुझे बहुत न होगा क्योंकि इसमें पुण्य बहुत भारी है ऐसे ऐसे दश रुपये बहुत से कामों में खर्च हुआ करते हैं आगे शुभ मिति फाल्गुन बदी ५ संवत् १६२६ तथा फरवरी सन् १८७० ई० ॥

तीसरा प्रकरण ॥

इसमें बड़ोंकी ओरसे छोटोंको पत्र हैं ॥

१ पत्र पिताकी ओरसे पुत्रको ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीव पुत्र रामदत्त को शिवप्रसाद का आशीर्वाद पहुँचे ॥

आगे बहुत दिनोंसे तुम्हारा पत्र नहीं आया जान नहीं पड़ता कि तुम क्या करते हो कुछ पढ़ते लिखते हो वा नौकरी करते हो हमने वहां तुमको इसलिये भेजा है कि जल्दी से कुछ विद्या पढ़के अपने गांव आकर घरकी ज़मींदारी आदिको देखो परंतु मालूम नहीं होता कि तुम क्या समझे बैठे हो वहां तुम्हें ५ वर्ष होगये और अबतक न जानागया कि तुमने क्या किया अपनी बात तो यह है कि लिखना पढ़ना इस निमित्त नहीं है कि तुम अपने घर का काम और लोगों के माथे छोड़कर आप दश रु० की नौकरी के पीछे सब देश की धूर छानो जो इसी खेती में रुई आदिके उपजाने में कोई यत्न निकाला जावे तो कितना बड़ा लाभ है देखो अंगरेजी कारीगरों को रुई की बड़ी चाहना है और जितनीही रुई हिंदुस्तान से उन्हें मिले वह कम है वे लोग बराबर यहां के हाकिमों से प्रार्थना करते हैं कि कोई ऐसी युक्ति निकालिये कि यहां से बहुत रुई मिलाकरे आगे शुभ मिति चैत्र सुदी ६ संवत् १६२७ ता० ८ मार्च सन् १८७० ई० ॥

२ पत्र श्वशुरकी ओर से दामाद को ॥

स्वस्तिश्री दीर्घजीवि रामदत्त को शिवदत्त का आशीर्वाद पहुँचे ॥

प्रकट हो कि बहुत दिनों से तुम्हारी कोई सुखदात्री पत्नी नहीं

आई उस तरफ का कुछ हाल जान नहीं पड़ता रात्रि दिन चित्त उसी ओर लगा रहता है भला कभी कभी चिट्ठी तो लिखा करो क्योंकि पत्री से आधी मुलाकात होती है मनुष्य कैसेही शोच और काम में हो पर जैसेही किसी मित्र वा भाई बंधु की पत्री आती है तो सब शोच दूर होजाते हैं और मन प्रसन्न होजाता है तुमने पहिले लिखा था कि मैं तहसील की पहिली दफा की सब किताबें पढ़ चुका हूं और इच्छा है कि नारमल स्कूल में भरती हो जाऊं भैया मेरे जो हमारी मति लो तो तुम्हारे लिये यह बहुत उत्तम होगा कि तुम आगरे की वैद्यविद्या की पाठशाला में भरती हो जाओ तीन वर्ष तक वहां डाक्टरी अर्थात् वैद्यकी सीखनी होगी और जबतक छः रुपये का मासिक भी मिलेगा इसको छोड़कर वहां तुम्हारी बड़ी साली भी है सब प्रकार का सुख तुमको होगा यहां की नौकरी बहुत अच्छी है वैद्यकी का उद्यम बड़ी इज्जत का होता है सरकार से अलग मासिक मिलता है और जिस रोगी को देखने को जावो उससे अलग फीस लेने का इख्तियार है केवल तीन वर्ष का परिश्रम है और तुम्हें बहुत जल्द आवेगा शुभ मिति माघ बदी ५ संवत् १९२७ तथा जनवरी सन् १८७१ ई०॥

३ पत्र पिता की ओर से कन्या को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीविनी बेटी रामदुलारी को चण्डी प्रसाद का आशीर्वाद पहुँचे ॥

बेटी तुम्हारी चिट्ठी पहुँची बड़ी खुशी हुई मुख्यकर इससे बहुत आनन्द हुआ कि वह तुम्हारी लिखी हुई थी तुम अपनी अम्मा से यहां के शुभ समाचार कहदेना मैं कह आया था कि

कानपुर से अपनी रसीद भेजूंगा परन्तु वहां रहने का मेरा योग नहीं पड़ा इस हेतुसे पत्र न भेज सका अब यहां श्रीकाशीजी में ८ दिन ठहरूंगा जो तुम्हें पत्री भेजनी हो रामजीमल्लकी कोठी नई चौक के पते से भेजना अठवारे के पीछे मैं कलकत्ते को जाऊंगा जो माल मैं लाया था उसमें एक तिहाई निकचुका है और अच्छा नफ़ा हुआ है और जो बाक़ी है चाहिये कि कलतक यह भी बिक जावे जो महाजन अपने रुपयों का तक्राजा करता हो तो तुम ५००) रु० वाला नोट किसीके पास गिरो रखवा देना और उसको बेबाक़ कर देना नहीं तो पन्द्रह बीस दिन में मैं आप खर्च भेजूंगा तुम अपने पढ़ने लिखने और सीने गुहने आदि में ग्राफ़िल न रहना विद्या और गुण बड़े पदार्थ हैं थोड़ा बहुत गणित का भी अभ्यास करलो तो मेरी बड़ी प्रसन्नता हो ॥
मिती वैशाख बदी ६ संवत् १९२६ तथा अप्रैल सन् १८६६ ई० ॥

४ पत्र बेटीकी बेटी के नाम ॥

स्वस्तिश्री नन्त्री पार्वती को शिवदयाल का आशीर्वाद पहुँचे ॥
बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं आया कल एक जनकी ज़बानी सुना कि तुम बीमार हो इस हालके सुनने से मुझे बड़ी उदासी हुई अब तुमको उचित है कि जल्द अपने जीवका सब हाल लिख भेजो मालूम नहीं कि किसकी ओषधि करती हो अच्छा चाहे जिसकी ओषधि हो परन्तु खबरदार बहुत परहेज से रहना खट्टे मीठे का बचाव करना जहांतक होसके भूखसे अधिक कभी न खाना जो तुम्हारे वैद्यकी सम्मति हो तो जगह बदल डालो इससे भी बड़ा फ़ायदा होता है हरदोई का पानी बहुत अच्छा नीरोगिक है और वहां तुम्हारी मौसी भी रहती है जो सब

की मर्जी हो तो तुम वहां चली जाओ और जबतक तुम्हारा जी अच्छा न होजावे तबतक चौथे दिन एक चिट्ठी भेजती रहो आगे शुभ मिति आ० बदी २ संवत् १६२७ तथा जून सन् १८७० ई० ॥

५ पत्र स्वामी की ओर से नौकर को ॥

स्वस्तिश्री आज्ञाकार रामदीन कहार को प्रकटहो कि इसमहीने की २४ तारीख को तीसरे पहरतक हम सब लौट आवेंगे तुम दो दिन पहले सब मकान भार बहार रखना कोठरी की कुंजी लाला ठाकुरप्रसाद अदालत के नाजिर के पास मैंने रखवादी है तुम उनके पास जाकर यह पत्र दिखाकर लेलेना और कोठरी से सब असबाब निकाल जो जहां का हो वहां धरदेना कि जिससे मकान सरायसा न समझ पड़े और हम मुसाफिर से रामदास ब्राह्मण को एकदिन पहले कहलादेना कि सबके लिये खानेको बनारखे सब भीतर बाहर के ५० मनुष्य होंगे ॥

लिफाफाके भीतर एक चिट्ठी विरादरी के निमंत्रण की है वह ललिता नाईको देदेना और समझादेना कि २६तारीख का न्योता सब जगह कहआवे और सबसे हाथ जोड़ आवे कि जरूर जरूर आवें पहुँचतेही दो तीन सवारियां बिदा होंगी इसलिये १२ कहारों का बंदोबस्त कर रखना घोड़ोंके लिये घास और हाथियों के लिये चाराआदि सब बटोर रखना कि उससमय दिक्कत न हो रामसहाय॥ मिति श्रावण सुदी २ संवत् १६२७ तथा जुलाई सन् १८७० ई० ॥

चौथा प्रकरण ॥

छोटों और बड़ों के प्रश्न और उत्तर ॥

१ प्रश्न पत्र पुत्र की ओर से पिता को ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वोपरि विराजमान पिताजी को रामदीन का प्रणाम चरण छूकर पहुँचे आगे बहुत दिनों से आपका कोई कृपा-

पत्र नहीं आया चलने के समय आपने कहाथा कि अठवारे अठवारे पीछे तुम्हें चिट्ठी लिखा करूंगा पर न जाना कि किस कारण अभी तक कोई पत्री नहीं आई चाहताहूं कि कोई कसूर आधीन की ओर से हुआ हो तो उसे क्षमा कीजियेगा आपके कहने से मैंने वैशाख सुदी २ से कुछ संस्कृत पढ़ने का आरंभ किया है अर्थात् अभी हितोपदेश पढ़ताहूं मुझको निश्चय है कि जो इसी भांति सालभर पढ़ता रहा तो नागरी बहुत दुरुस्त व स्वच्छ होजायगी अपने तन मन से मिहनत करताहूं आगे जो कुछ उसका फल मिले वही मुख्य बात है ज़ियादह अर्ज प्रणाम ॥

उ० पत्र पिता की ओर से पुत्र को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीव लालारामदीन को शिवदीन का आशीर्वाद पहुँचे ॥

आगे मैं ईश्वरकी कृपासे अच्छीतरह हूं तुम्हारी तंदुरुस्ती राति दिन परमेश्वर से चाहताहूं तुम्हारी चिट्ठी पहुँची बड़ी खुशी हुई तुमने जो मेरे पत्रके न पहुँचने का गिला लिखाथा सो ठीक और वाजिब है यथार्थ जैसा तुम लिखतेहो मैंने वादा कियाथा कि आठवें दशवें दिन मेरा एक खत पहुँचता रहेगा पर क्या लिखूं इन दिनों में हाकिमों के साथ बराबर दौरे में रहना हुआ इस बाइस से पत्र भेजने में ढीलहुई बाकी सब तरह कुशल है खातिरजमा रक्खो हमारी आज्ञानुसार तुम्हारे संस्कृत पढ़ने का हाल जानागया तुमने बहुत अच्छा किया हितोपदेश पढ़ने से ज़बान दुरुस्त होने के सिवाय और बहुतसे लाभ हैं कि उसके वर्णन बहुधा ऐसी शिक्षा के हैं कि जो उनका ख्याल किये रहे तो पूरी आदमियत मिले जो तुम मिहनत करते हो जो ईश्वर चाहेंगे तो अवश्य परिश्रम का फल

पाश्रोगे बिन मिहनत विद्या नहीं मिलसकी ॥ आगे मिति कार्ति रु
सुदी ५ संवत् १६२७ तथा सितम्बर सन् १८७० ई० ॥

२ प्रश्न पत्र पुत्रकी ओर से माता को ॥

सिद्धिश्री ६ कृपाकारिणी माताजी को चरणसेवक रामदीन
का प्रणाम पहुँचे ॥

आपसे बिदा होकर नौकरी के खोज में काशीजी में पहुँचा एक
सप्ताह के पीछे कृष्णदत्त व गयादत्त महाजनों की दूकान में १५) रु०
माहवारी पर कारिन्दगरी के काम में नौकर हुआ अभी केवल
एक महीने की तनखाह मिली है उसमें ७) रु० खर्च होचुके हैं
बाकी ८) रु० घरके वास्ते रखे हैं भगवान् चाहेंगे तो दो तीन
महीने में २५) रु० तक की हुंडी भेजूंगा इस शहर में रेशमी
कपड़े अच्छे और सस्ते बिकते हैं मेरा मन है कि जरूरत के मुवा-
फ़िक़ जो आप आज्ञा दें तो मोल लेकर भिजवा दूं इसके सिवाय
मेरे एक मित्र यहां हुये हैं वे रेशमी कपड़ों की दूकान करते हैं वे
मुझे उधार भी देंगे और मोल में भी कमी करेंगे आपका हुक्म
चाहता हूं अधिक क्या लिखूं ॥ आगे शुभ मिति भादों सुदी ३ संवत्
१६२७ तथा अगस्त सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र माता की ओर से पुत्र को ॥

स्वास्तिश्री चिरंजीवि पुत्र रामदीन को मेरा बहुत तरह से
आशीर्वाद पहुँचे ॥

बेटा तुम्हारी चिट्ठी बड़ी औसेर में आई आंखें प्रकाशित हुई और
छाती जुड़ानी तुम नीके रहो तुम्हारी नौकरी सुनकर बहुत मन
आनंद हुआ और दिलजमई हुई तुमने जो लिखा कि तीन चार
महीने में २५) रु० की हुंडी भेजूंगा सो मेरे भैया तुम जीते रहोगे
तो बहुतसी हुंडियां भेजोगे और मैं खर्च करूंगी तुमसे मुझे सब

आसरा है यह तुम्हारी सुपूतता है कि तुमको अपने घरकी इतनी फिक्र है मैं यह क्या कम समझती हूँ कि एक तुम दूसरे तुम नौकरी पर निकले और अपने चार पैसे जो कमाओ मेरी ओर से तुम बेफिक्र रहो मैं यहां अपने देश में हूँ जो कुछ खर्चका काम लगेगा सो सब तदबीर कर लूंगी तुम वहां परदेश में किसी तरह की दिक्कत न उठाना दो पैसे अपने पास हमेशा रखना कपड़े की बाबत जो तुमने लिखा था सो भैया मेरे उसका हाल यह है कि जो जरूरत पड़े तो किसी चीजका काम नहीं है पर हाथ में भी तो कुछ होना चाहिये कोई सेंट नहीं देवेगा जो कपड़ेवाला तुम्हारा व्यवहारी है और तुम उससे लाभकी अभिलाषा रखते हो तो तुम भी तो उसके मित्र हो और उसे भी तो तुमसे अपनी प्राप्ति की इच्छा है जो उधार देवेगा तो अपना नफ़ा रखकर देवेगा यह तुम्हारी भूल है कि वह तुमको सस्ता देवेगा अच्छा अभी रह जाओ फिर आगे देख लिया जावेगा आगे आशिष के क्या लिखूं ॥ शुभ मिति कुआर बदी ३ संवत् १६२७ तथा सितम्बर सन् १८७० ई० ॥

३ प्रश्न पत्र पौत्र की ओर से दादे को ॥

सिद्धिश्री ५ सर्वोपरि विराजमान दादाजी को रामदत्तका प्रणाम पहुँचे ॥

आगे २४ तारीख का लिखा हुआ पत्र कल तीसरे पहर डाक के द्वारा मेरे पास पहुँचा लिखे हुये हाल जाने आपने जो छोटी बहिन के विवाह की बाबत लिखा है कि उसके देने से भी जल्द छुट्टी पाना बहुत जरूर है और यह कि आपकी इच्छा है कि कहीं से उधार लेकर फाल्गुनही तक उसे किसी न किसी तरह अपने और पुरुषों की भांति के लायक अपने ठिकाने लगा दूं सच सच तो यह है कि जो आपके विचार में होगा वह ठीक

है और मुझे उसमें उज्जर करने की मजाज नहीं पर आप केवल उसका हालही नहीं लिखते किंतु इस सेवक की सलाह भी पूछते हैं इस वास्ते बड़ी आधीनता और दीनता के साथ लिखता हूँ कि मेरी छोटी बुद्धि में अभी उसकी कम अवस्था है अर्थात् अभी केवल पांच वर्ष की होवेगी उसका विवाह करना इतनी जल्दी बहुत बेसलाह है अभी बहुतसे संदेह और डर हैं क्या लाभ जो अपने ऊपर अपराध लीजिये इसके सिवाय अभी इतना सावकाश नहीं कि और काम न किया यही सही फिर कर्ज लेकर सैकड़ों रुपये ब्याज में देकर ऐसे बेजरूरी काम कीजिये तो कोई विचार की बात न होगी इस समय पांच छः हजार रुपये लेकर ठाकुरों की तरह घर फूंक तमाशा देखा गया तो पीछे को इसका फल क्या होगा और कहां से आवेगा और किस तरह से बचाव होगा आगे जो हुक्म होगा उसमें उज्जर न होगा ॥ आगे शुभ मिती पौष बदी ५ संवत् १६२६ तथा दिसम्बर सन् १८६६ ई० ॥

उ० पत्र दादा की ओर से नाती को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि रामदत्त को शिवदत्त का आशीर्वाद पहुँचे ॥

तुम्हारी चिट्ठी आई तुम्हारी बुद्धिमानी से बड़ा आनन्द और भरोसा हुआ मुझे तुम्हारी सलाह बिना रत्ती भर काम करना मंजूर नहीं है ईश्वर ने तुमको सब तरह की बुद्धि दी है और तुम्हारी हर एक बात बड़ी बुद्धि और शहूर की होती है तुम्हारे पत्र के आने पर मैंने भी जो विचार किया तो तुम्हारी सलाह बहुत अच्छी पाई सचमुच पांच छः वर्ष की लड़की का विवाह करना बेमतलब है और सब तरह से इसमें डर है इसके सिवाय धर्मशास्त्र में भी दश वर्ष तक का बचाव है किसी तरह की कोई जल्दी नहीं शायद तबतक तुमपर ईश्वर की कृपादृष्टि होजावे और तुम किसी

ऊंची नौकरी पर मुकर्रर हो जावो और उसकी भाग्य से अच्छी तरह उसके विवाह करने की सामर्थ्य हो जावे इस समय कर्ज लेकर विवाह करना अपने ऊपर एक अपराध मोल लेना है अब मैं ऐसी बात का मन कभी न करूंगा ॥ शुभ मिति माघ वदी २ संवत् १६२६ तथा जनवरी सन् १८७० ई० ॥

४ प्रश्न पत्र भानजे की ओर से मामा को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य मामाजी श्री ५ हसनबेग को असगर अली का सलाम और बन्दगी पहुँचे ॥

आगे एक महीने से माताजी को ज्वर आता है पहिले पहिल ठंडाई आदिक पिलाई गई परन्तु उनसे कुछ ब्योरा न हुआ अब श्री डाक्टर साहब के विचार से अंगरेजी कुनैन सबेरे व संध्या को दी जाती है ईश्वर की कृपा से किसी तरह का फर्क जान पड़ता है यकीन है कि जल्दी अच्छी भांति आराम हो जावे आप सुचित रहें माताजी आपको बहुधा याद किया करती हैं आपके पास कोई सवारी भेजने को मुझसे आज कहा है सो मैं चचा साहब का घोड़ा खुदाबख्श साईस के साथ भेजके चाहता हूं कि जरूर आइयेगा और छोटे भाई नसीरुद्दीन को भी अवश्य साथ लाइयेगा जिसमें आपके दर्शन और उनकी भेंट दोनों हों ॥ आगे शुभ मिति १ वैशाख सुदी १२ संवत् १६२७ तथा अप्रैल सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र मामा की ओर से भानजे को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि सैयद असगर अली को हसनबेग की आशिष पहुँचे ॥

आगे तुम्हारी चिट्ठी आई तुम्हारी माता का हाल सुनकर जी को बड़ी व्याकुली हुई हमको बड़ा आश्चर्य है कि न तुमने और न तुम्हारे पिताने बीमारी का हाल आज तक मुझको लिखा

और अब लिखते हो कि एक महीने से बीमार हैं वाह वाह लोगो आपकी बुद्धिमानी खैर ईश्वर का धन्यवाद है कि अब पहिले से कुछ आराम जान पड़ता है भगवान् चाहेंगे तो जल्द रोग नाश होगा यह इलाज इस बीमारी के लिये अमृत है तुमने जो मेरे आने के मध्ये लिखा था सो भैया मेरे तुम्हारे लिखने का कुछ काम न था मैं आपही तुम्हारी पत्री के पहुँचते ही वहां आता परन्तु क्या कहूं सुनने में आता है कि डिपुटी कमिश्नर साहब बहादुर कल निमक की कोठी देखने आवेंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि हमेशाह की तरह अस्पताल में भी आजावें इस वास्ते कल तक आने में लाचार हूं परन्तु परसों अपने यहां जरूर जानना और भैया नसीरुद्दीन को घोड़े पर चढ़ाकर पठाता हूं यद्यपि इस गैरहा-जिरी से मदर्स में उनका बड़ा हर्ज होगा और लड़के आगे हो जावेंगे परन्तु लाचार तुम्हारे बुलाने से खाना करता हूं दो एक दिन में उसे जल्दी लौटा देना नहीं तो मुदर्रिस साहब मुझसे गिल्ला करेंगे और उसका हर्ज अलग होगा ॥ शुभ मिति ज्येष्ठ सुदी ३ संवत् १६२७ ता० २४ मई सन् १८७० ई० ॥

५ प्रश्न पत्र भतीजे की ओर से चचा को ॥

सिद्धि श्री सर्व शुभोपमायोग्य श्री ५ चचा साहब को श्रीदत्त का प्रणाम पहुँचे ॥

आगे ईश्वर की कृपा से यहां सब तरह कुशल क्षेम है आपकी कुशल चाहिये आपका कृपापत्र आया उससे कृतार्थ हुआ शंकर सुनार की बेकारी और तंगी का हाल सुनकर मनमें बड़ा रंज हुआ अपनी भागों नौकरी का द्वारा इन दिनों ऐसा बंद होगया है जहां देखो बेरोजगारी है कहीं नौकरी का नाम नहीं है उसपर खराबी यह है कि रोज रोज सब तरह के लोग पढ़ लिखकर तैयार

होते जाते हैं और सबको यही चाह रहती है कि कहीं मुहरिरी आदि की नौकरी करें यह किसीको हौसिला नहीं होता कि कोई कार खड़ा करें या कुछ माल लेकर उसको नफ़्फ़ा की जगह बेचें या अपने कारको अपनी बुद्धि और जानोगोई से चमकावें और हजारों तदबीरों जीविका की हैं उनमें से किसीको अजमाते नहीं जिसको देखो नौकरी ढूढ़ता है अंगरेज लोगों को देखो कि अच्छे अच्छे घरके बड़े धनवान् हों परन्तु जिस काम में फ़ायदा देखेंगे उसी को करेंगे इन दिनों में दैवयोग से मेरी कचहरी में भी कोई जगह खाली नहीं है कि उस पर उन्हें बुलाऊँ एक मेरे कृपाकर साहब गोंडे के ज़िले में मुहतमिम बन्दोबस्त हुये हैं जो आप कहें तो मैं उनके पास उसकी बाबत अर्जी भेजूं तअज्जुब नहीं कि वे साहब दया करके उसको नौकरी की कोई राह निकाल दें जैसा आप लिखेंगे वैसा किया जावेगा ॥ आगे शुभ मिति कार्तिक कृष्ण १४ संवत् १९२७ ता० ६ अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र चचाकी ओर से भतीजे को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि प्राणाधिक प्रिय श्रीदत्त को रामप्रसाद का आशीर्वाद पहुँचे ॥

तुम्हारी पत्री आई ईश्वर तुम्हारी दिनदिन बढ़ती करे और जीता रक्खे सचमुच अजब तरह का समय आया है कि जहां देखो नौकरी का रोना है और मैंने तुमको ऐसेही में लिखा कि जब उसके लिये ढूढ़ते ढूढ़ते बनाय थक गया और कोई सूरत न निकली पड़ोसी का बड़ा हक् होता है हमसे न बिनती करे तो किससे जाकर करे गोंडे जाने में उसको किसी तरह का हीला न होगा आप बहुत शीघ्र उन साहब को लिखें जिस समय वे बुलावेंगे उसी क्षण जावेगा घरीभर की देर न होगी तुम अब उसका वह हाल न जानना

जो दशवर्ष पहिले था बल्कि उसे पहिले इतनी जरूरत न थी माता पिता का धन सेंट हाथ आया था और यही कारण हुआ कि तुमने दो तीन बार इसमें सिफारिश की पर उसकी बेपरवाही से कोई काम देखने में न आया खैर अब भी कुछ हर्ज नहीं शायद उसका यह बुढ़ापा तुम्हारी ही बाइससे गुजरे ईश्वर तुमको जीता रखे ॥ आगे मिती कार्तिक सुदी ८ संवत् १६२७ तथा अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

६ प्रश्न पत्र किसी रोगी की ओर से वैद्य को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य हकीम साहब श्री ५ गंगादीन को शिवराम की बन्दगी और सीताराम पहुँचे ॥

आगे लाचार अपनी गरज अर्ज करता हूँ कि दो महीने से मेरे पेट में कुछ विकार रहता है अर्थात् जो खाता हूँ नहीं पचता यद्यपि पहिले से खुराक कम करदी है पर वह भी नहीं पचती इसके सिवाय कभी कभी मूड़ भी पिराता है पहिले भी पिराता था पर हकीम मुहम्मद सैयदखां साहब की दवाई से आराम आगया था फिर अब बीस दिन से बीमार हूँ मेरी नौकरी का हाल आप अच्छी तरह जानते हैं कि जिस तरह की है इसमें एक दिन करार से एक जगह मुकाम नहीं रहता आज यहां कल वहां उसपर सिवाय घोड़े के किसी और सवारी में निर्वाह भी नहीं फिर उसपर यात्रा की तकलीफें और खाने पीने में भी जून कुजून होजाती है बात यह है कि हमेशा एक रोगी के मुवाफिक बना रहता हूँ जबतक आप कृपा करके कोई दवाई वा पाक आदि की कृपा न करेंगे तबतक रोजकी बीमारी से छुट्टी न पाऊंगा इस कारण चाहता हूँ कि आप बड़ी दया करके जैसा कहें वैसा करुं आपका बड़ा यश होगा ॥ मिती चैत्र सुदी १२ संवत् १६२७ तारीख ३ मार्च सन् १८७० ई० ॥

सिद्धिश्री मुंशी साहब श्री ५ शिवरामको गंगादीन हकीम की जय सीताराम पहुँचे ॥

आपका कृपापत्र अजीर्ण होने की बाबत आया भला बड़ी बात है कि अपनी गरज पर तो मेरी सुधि आई चाहे आप सुधि करें या न करें ईश्वर आपको जल्दी आराम करे विना नाड़ी देखे आप की दवाई में कभी नहीं करसका बीमारी बहुत दिन की होगई और एकाएकी विना देखे भाले दवा लिखदेना सलाह नहीं है आजके पांचवें दिन मेरा मुकद्दमा कचहरी में पेश होनेवाला है इस कारण वहां मेरा आना जरूर होगा जो आप घर पर रहें और थोड़ी मिहनत करके हकीम सफाबख्श साहब के मकान पर आजायें तो बहुत अच्छी तरह बीमारी खुलजावेगी और आपके सामने दवा लिखदूंगा आप खातिरजमा रखें ईश्वर चाहेगा तो बीमारी का नाम न रहेगा परन्तु थोड़े दिनों के लिये या तो आपको छुट्टी लेनी होगी वा कोई आराम की सवारी पीनस सी रखनी होगी ॥ मिति वैशाखबदी ६ संवत् १९२७ तथा माह अप्रैल सन् १८७० ई० ॥

७ प्रश्न पत्र शिष्य की ओर से गुरु को ॥

सिद्धिश्री सर्वोपरि विराजमान श्री ६ गुरुजी साहब को मदारी लाल की दण्डवत् पहुँचे ॥

आप जानते होंगे कि बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि दुःखी गरीबों के लिये शहर में एक दवाईखाना बनवाऊं पर हर एक कार्य अपने समय पर होता है इस वास्ते कोई सूरत अब तक देख न पड़ी अब ईश्वर की कृपा से जान पड़ता है कि उसका समय आगया सो मेरे मन में है कि परसों सबेरे छः बजे नेव खोदी जावेगी उस समय आपके होने से बड़ी सिद्धि है शायद कि कोई अच्छी बात निकल आवे इसीसे आप कृपा करके १ घड़ी के वास्ते तक-

लीफ उठाकर जरूर आइयेगा पुण्य का काम है आगे शुभ मिती
माघ सुदी २ संवत् १९२७ तथा माह जनवरी सन् १८७१ ई० ॥

उ० पत्र गुरुकी ओर से शिष्य को ॥

स्वस्तिश्रीचिरंजीवि मदारीलालको रामप्रसादकी अशीश
पहुँचे ॥

तुम्हारी चिट्ठी मेरे बुलाने के लिये आई तुम्हारी अच्छी नीति
वा पुण्य की इच्छा देखकर बड़ा आनन्द हुआ ईश्वर तुमको इस
से अधिक सामर्थ्य दे ठीक ठीक इससे अधिक कोई नाम निशान
नहीं और न कोई इससे अच्छा काम है परमेश्वर चाहेंगे तो परसों
सबेरे जरूर जरूर खुशीसे आऊंगा जो शायद आना न हुआ तो इन
थोड़ी मोटी मोटी बातों का खयाल जरूर रखियेगा अर्थात् जहां
मकान बने वह जगह नीची न हो उसके चारों तरफ खुला हो उसके
नजदीक कोई नाला या खेत आदि ऐसा न हो कि जिससे दुर्गन्धि
आवे दूसरे जहां तक होसके मकान उत्तरमुख हो किसी के कहने
पर न जाना इसमें सब ऋतुओं में आराम होगा और कुरसी जरूर
हो दीवारें ऊंची हों और चारों तरफ खिड़कियां रखवाना रसोईखाना
आदि दूर हों संवत् तिथिवार आदिका पत्थर भी रखना यद्यपि तुम
बुद्धिमान हो और ये सब बातें तुमने पहिले ही से सोचली होंगी
परन्तु सुधि रखने के लिये लिखी गई हैं शायद तुम्हारे काम
आवें ॥ शुभ मिती माघ सुदी २ संवत् १९२७ तथा माह जनवरी
सन् १८७१ ई० ॥

पांचवां प्रकरण ॥

बराबरवालों के नाम ॥

१ पत्र भाई की ओर से भाई को ॥

स्वस्तिश्री ३ भाई रामनारायणको शंकरदत्तकानमस्कार पहुँचे ॥

भाई साहब अभी तक यहां वर्षा नहीं हुई है इससे सब लोग घबराते हैं ईश्वर अपनी कृपा करे नहीं तो हजारों मनुष्य और पशु मर जावेंगे जाना नहीं कि उधर क्या हाल है ऐसी दिक्कदारी न हो तो चौपायों के लिये कुछ चारा और घर के निमित्त थोड़े गेहूं और चने भेजवा दीजिये यहां बड़ी तंगी है भूसा नाम मात्र को भी नहीं मिलता जमीन पर किसी प्रकार की घास नहीं जमती आप जितने गेहूं भरवा गये थे वे सब चुक गये अब केवल बोने भरके बाकी हैं जो उसमें हाथ लगाया जायगा तो क्या बोंवेंगे और घोड़े के दाने के लिये तो अधिक दिक्कत है क्योंकि पांच छः सेर दाना प्रतिदिन उसको चाहिये वह कहां से आवे जो वह दोसेर भी पावे तो बड़ी बात है जो तुम्हें इसके बेंचने में कुछ उज्जर न हो तो इस समय एक दो गाहक हैं उनके हाथ बेंच डाला जावे ॥ मिति आषाढ़ वदी ५ संवत् १९२६ तथा जून सन् १८६६ ई० ॥

२ पत्र भाई की ओर से बड़ी बहिन को ॥

स्वस्ति श्री ३ परमहितकारिणी बहिन को करी मुहीनका यथा-योग्य पहुँचे ॥

आगे जबसे तुम उस ओर को गई हो तुम्हारे नाम दो चिट्ठियां भेजी गई परन्तु जवाब अभी तक नहीं आया जान नहीं पड़ता कि क्या कारण है हालसाल लिखने की जरूरत यह है कि तुम्हारे कहने अनुसार भैया सय्यदजान के विवाह के लिये इमामीनाई के द्वारा कई जगह बतकही की गई उसमें दो स्थानों पर गणना बन गई है एक तो सुरादाबाद के रईस मुहम्मद जमाखां के यहां और दूसरी शाहाबाद के रईस मोलवी मुबारकहुसेनखां के यहां दोनों जगह की जाति विरादरी का हाल तुम अच्छी तरह जानती हो और दोनों

लड़कियां बहुत चतुर और उमर में १६ वर्ष की हैं इस मुद्दे में जाति
पांति के लोगों से और पुरनियों से भी पूछा गया उन सब लोगों
की मर्जी होती है कि मुरादाबाद में अच्छा है परन्तु अब तुम्हारी
जैसी मर्जी हो वैसा लिख भेजो और ५००) रु० की हुण्डी भेज
दीजियो कि जिससे रजब के महीने में बररक्षा की रीति कर दी
जावे ॥ मिती कार्तिक वदी ६ संवत् १६२७ ता० ७ माह जमादि-
उस्सानी ता० १ अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

३ पत्र निज के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ मित्रवर कृपाकर शेख इमामबरूशासाहब को
करीमुद्दीन का सलाम पहुँचे ॥

आगे आप की खुशी की पत्री अभी मेरे पास पहुँची लिफाफा
खोलते ही बहुत दर्प हुआ ईश्वर ऐसा उत्साह सबको देवे परमात्मा
करे वह लड़का आपको बहुत फले और उसकी आयुर्वल बढ़े और
आपकी सेवा करे और आपकी कृपा उसके ऊपर सदा बनी रहे
इसमें संदेह नहीं है कि वह तुम्हारे अंधे घर का दीपक उत्पन्न हुआ
इससे जितनी कुछ बढ़ाई और धन्यवाद ईश्वर का करें वह सब
थोड़ा है और अपनी खुशी का कुछ हाल नहीं कह सका सत्य बात
तो यह है कि जो लोग कहा करते हैं कि खुशी के मारे जामा में
नहीं समाते निश्चय वही मेरा हाल है और जब तक अपनी आंखों
से उसे नहीं देखता तब तक मुझे कभी कल न पड़ेगी इससे परसों
में अवश्य वहांहीं होऊंगा और ५) रु० भैया अहसानअली की
माता हाथ की चुम्बई के भेजती है निश्चय है कि मेरे साथ वे भी
उस दिन आवेंगी क्यों कि उन्हें यह निश्चय ही नहीं होता कि सब-
मुत्र यह खुशी हमारे भाग्य की है ॥ मिती भाद्रपद सुदी १४
संवत् १६२७ ता० ४ अगस्त सन् १८७० ई० ॥

स्वस्तिश्री ३ धर्मसागर सेठजी को रामदयालका आशीर्वाद पहुँचे ॥

बाहर से जानागया कि आप जगन्नाथजी जाने का विचार करते हैं देखाचाहिये कि आपके जाने के पीछे कोठी के गुमास्ते हमारे देने लेनेका व्यवहार कैसे चलावेंगे अबतक हमेशा जबसर्कार से किस्त लगती थी तो आपके यहां से लेकर सर्कारी खजाने में रुपया दाखिल किया जाता था और फिर पीछे से देहात की आमदनी का रुपया आपकी कोठी में जमा होतारहा है अब उसी रीति पर आप अपने कारिंदों से आज्ञा देदीजिये कि आपके पीछे रुपये के देने में किसी तरह का इन्कार और ढीली न करें आगे बहुत क्या लिखूं ॥ मिती ज्येष्ठ कृष्ण ५ संवत् १९२८ मई सन् १८७१ ई० ॥

५ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ मित्रवर प्राणाधिक प्रियकर मुजफ्फरखां को अबदुल्करीम का सलाम पहुँचे ॥

आपका प्रियपत्र अबदुल्हक और अहमदुल्लह के विवाह में मेरे शामिल होनेके विषय में पहुँचा उससे बड़ीही खुशी हुई सच है यह खुशी का दिन ईश्वरने बड़ी मिन्नतों और विनय से दिखाया है मैंतो शिरके बल पहुँचता पर क्या करूं कि एक महाजनने मेरे ऊपर दीयानी में २०००) रु० की नालिश की है और जो तारीख इन भैयाओं के विवाह की है उसी दिन उस मुकदमे की पेशी है इस कारण लाचार हूं जो होसकेगा तो गिरते पड़ते जरूर विवाहके समय रात्रिको वहां पहुँचूंगा और आपसे भी इस मुकदमे में सलाहकी आवश्यकता है क्योंकि इस मुकदमे को आप अच्छी तरह जानते हैं कि दो वर्ष में ५००) रुपयों से २०००) दो

हजार होगये हैं मैंने अच्छे प्रकार से सुना है कि वही खाता और रोजनामचा जाली बनाया गया है इस मुकदमे में मीरवाजिदअली साहबको वकील कर दिया है इस विचार से कि आपसे और उनसे एकही वास्ता है इससे कृपापूर्वक आप बारहबंकी जाकर मीरसाहब को इस मुकदमेका असल हाल भलीभांति समझा दीजिये और उनका मिहनताना और शुकुराना अभी ठीक नहीं हुआ आपको जैसा योग्य समझ पड़े बातचीत करके वैसा ठीक करलीजिये ॥
मिती पौष सुदी १२ संवत् १९२८ विक्रमी तथा दिसम्बर सन् १८७१ ई० ॥

६ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री दयासिंधु पश्चिमी सदर अदालत के वकील पंडित जयनारायण साहब को रामनारायण का नमस्कार पहुँचे ॥

आगे हमारे श्वशुर महताबसिंह ने शरीर छोड़ दिया और मरे हुये राजाके भाई बन्धुओं में राज्यके निमित्त आपसमें झगड़ा है और हालसाल इलाका सरकारकी ओरसे खामतहसील है इसलिये आपको तकलीफ देताहूँ कि आप दो दिन के लिये यहां आकर मुकदमे का हाल जानकर बता दें कि किस बुनियाद पर यह मुकदमा किया जावे अर्थात् राजा साहब ने हिवहनामा अर्थात् दानपत्र भी अपने नाती भैया नवनिहालसिंह के नाम लिखदिया था अब मुकदमा दानपत्र पर दायर करें वा अपने वरामत पर जैसी आपकी अनुमति होगी उसके अनुसार किया जावेगा शुभ० ॥

७ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री शुभोपमायोग्य श्री ३ दीवानजी को शिवदत्त का आशीर्वाद पहुँचे ॥

आगे आपको लिखता हूँ कि माधवप्रसाद का इलाका बहुत सी डिगरियां होने के कारण से इन दिनों नीलाम हुआ है और चारगांव हमने भी लिये हैं परन्तु उनमें से दो गांव की जमीन बे पानी है जो वर्षा अच्छी हुई तो खरीफ अच्छी पैदा होती है परन्तु बिना कुओं के रबीअ होना कठिन है इस समय में सब लोगों की यह सलाह पड़ती है कि दोनों निपनियां गांवों में पांच पांच सात सात कुएं पके बनवा दिये जावें इसलिये आप को लिखता हूँ कि आप बनवाने के काम में बहुत चतुर हैं आपने बहुतेरे महान और कुएं बनवाये हैं अब आप मुझे सम्मति दें कि अपने आप बनवाना अच्छा होगा कि ठेके में कृपापूर्वक आप इसका उत्तर जरूर दीजियेगा ॥ शुभ मिति चैत्र शुक्ल ५ संवत् १९२८ तथा सन् १८७१ ई० ॥

८ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री मित्रवर श्री ३ शिवलालत्रिपेदी को रामाधीन मिश्र का नमस्कार पहुँचे ॥

लाख लाख शुक्र सहस्र सहस्र जिह्वाओं से है कि बहुत दिनों में आपका दयापत्र पहुँचा और चित्त को बड़ा आनन्द दिया ऐसी खुशी हुई कि उसका वर्णन नहीं होसका जो गिल्ला गुजारी की बातें आपने मुझपर लिखीं सो यह वही कहावत है कि उलटे चोर कोतवाले डाँड़ें मेरी दो तीन चिट्ठियों का जवाब आपने न लिखा और अब चतुराई करते हो और उलट गिल्ला सुनाते हो और पत्रों के न पहुँचने का बहाना लेते हो मितने के समय में आपसे समझ लेता परन्तु अब आपकी ओर से प्रारम्भ हुआ है तो सारा गुस्सा जाता रहा और मन साफ होगया और मुझे

भरोसा है कि आप इसी तरह सदा खत पत्र भेजते रहिये क्योंकि पत्री से आधी मुलाकात होती है प्रकट रहे कि मैं नागौर में ५०) रु० माहवारी पर सबडिपुटीइन्स्पेक्टरी के अधिकार पर नियत हूं अधिक शुभ मिति कार्तिक बदी ७ संवत् १९२७ तथा माह अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

६ पत्र दोस्त के नाम ॥

स्वस्तिश्री मित्रजी श्री ३ हकीमुद्दीनसाहब को गुलाम आजम का सलाम पहुँचे ॥

आगे आपका हितकर पत्र पहुँचा आपने जो जल से तहजीब की काररवाई का ब्योरा पूँछा सो मित्र मेरे आज कल यहां स्त्री-शिक्षा के मध्ये बड़े बड़े शास्त्रार्थ होते हैं बड़े बड़े ज्ञानवान् लोग अपना अपना आशय प्रकट करते हैं अर्थात् वे लोग यह वर्णन करते हैं कि स्त्री और पुरुष दोनों ईश्वर के जन हैं और ईश्वर की उत्तम वस्तुओं में इन दोनों का बराबर हिस्सा है और विद्या जिससे ज्ञान उत्पन्न होता है उससे स्त्रियां क्यों अलग रक्खी जावें यह केवल मर्दों का हठ अधर्मी और स्त्रियों की सरासर हानि करनी है स्त्री-शिक्षा के असंख्य फल वर्णन करते हैं सबसे बड़ा यह फल है कि इससे उन्हें पूरी मनुष्यता प्राप्त होगी और जिस आशय से परमात्मा ने स्त्रियों को बनाया है वह प्रयोजन पूरा होगा अर्थात् सब रीति से पुरुष की साथी और शोचनिवारिणी होंगी इन स्त्रियों की सन्तति भी अच्छी होगी क्योंकि माता पिता की संगति के असर से कोई अधिक असर बालकों पर नहीं होता तिस पीछे गृहस्थी और दुनिया-दारी के कामों में कामिल होंगी और घरकी बे बन्दोबस्तियों से जो बहुत सी विपत्तियां लोगों पर पड़ती हैं उससे अपने घरको बचावेंगी ऐसेही यह कोई नहीं कहता कि स्त्रीशिक्षा धर्म से विरुद्ध है

परन्तु लोकाचार देखकर संदेह करते हैं आपका विचार इसमें क्या है ॥ मिती वैशाख सुदी १२ संवत् १६२७ तथा सन् १८७० ई० ॥

१० पत्र खां के नाम ॥

स्वस्तिश्री मित्र श्री ३ भगडालूखां को सुलहबाजखां का सलाम पहुँचे ॥

लोगों की ज़बानी मालूम हुआ कि यद्यपि सारे अवध से भगड़ा बखेड़ा उठगया परन्तु तुम्हारे यहां अभी वही नवाबीका अंधेर है कोई महीना ऐसा नहीं बीतता कि जिसमें दो एक फसाद न हों इस बीच यह सुन पड़ा कि दशदिन पहिले किसी भगड़े में आप पर ५००) रुपये जुर्माना भी होगये इसके सुनने से और बहुत क्लेश हुआ अच्छा होगा कि जो तुम यथाशक्ति अपना मिज़ाज दुरुस्त करो और हितोपदेश की किताबें बहुधा देखा करो और जिस समय गुस्सा आवै एक घूंट पानी पीकर यह मन में विचार लो कि इस क्रोध का अन्त क्या होगा और जो चुप हो रहोगे तो कितनी आफतों और खराबियों से बचाव रहेगा ईश्वरने जो मनुष्य को पशु पक्षियों से उत्तम किया है तो केवल ज्ञानही का भेद है जो मनुष्य भी पशु पक्षियों की भांति लड़ाई और गुस्से में पड़ा रहे तो फिर उसमें और बाघ सिंहादिकों में क्या अंतर है यद्यपि यह पत्र पढ़कर आप नाराज होंगे परन्तु जब आपका क्रोध शान्त होगा और आप विचारांश करेंगे तो मेरा बड़ा गुण मानियेगा ॥ मिती श्रावण सुदी ३ संवत् १६२८ तथा जौलाई सन् १८७१ ई० ॥

दो० रिपुयुगनवविधुवर्षसितशशिमदनवतपमास । पूरीपत्रहितैषिणी हुईसुमऊनिवास ॥

समाप्तार्थ ग्रन्थः ॥

इति ॥